ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 1, January 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.421

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

प्रत्यक्षा सिन्हा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

Vijendra Prasad Meena

Assistant Professor in Hindi, S.P.N.K.S. Government PG College, Dausa, Rajasthan, India

सार

प्रत्यक्षा का कथा-लेखन स्त्री के प्रति हमें अधिक संवेदनशील और सोच को उदार बनाता है. स्त्री के लिए दुनिया में जहाँ-जहाँ जो दरवाजे- खिड़कियाँ बंद हैँ उन्हे खोलने का साहस करते हुए नई संभावनाओं के साथ बहुत चुपचाप स्त्री के लिए समाज के नजरिये को बदलनें में अपनी विशेष भूमिका निभाता है. हिंदी साहित्य की दुनिया में पिछले कुछ सालों से बड़ी संख्या में स्त्री रचनाकार हर विधा में काफी सक्रिय हैं और उन्होंने अपनी इस सक्रियता से साहित्य को समृद्ध भी किया है. उनकी रचनाओं ने साहित्य को नए आयाम दिए हैं. अगर वर्ष 2022 को स्त्री रचना शीलता का साल कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी. लॉकडाउन और कोरोना काल के बाद जब स्थितियां सामान्य हुईं तो हिंदी के साहित्यकारों ने अपनी रचनात्मक गतिविधियों को तेज किया, जिसका नतीजा हुआ कि कई कृतियां सामने आईं. इनमें स्त्री रचनाकारों ने उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक, आलोचना, अनुवाद आदि विधा में इस वर्ष कई महत्वपूर्ण कृतियां सामने आईं.

परिचय

अगर यह कहा जाए कि 21वीं सदी एक तरह से स्त्री लेखन की सदी बनती जा रही है, चाहे कविता हो या कहानी या उपन्यास, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि स्त्री लेखकों की उपस्थिति हर विधा में नजर आ रही है। पहले तो आमतौर पर दसेक साल में एक नई पीढ़ी उभर कर आती थी लेकिन अब तो सोशल मीडिया और डिजिटल संसार में चार-पांच साल के भीतर ही साहित्य की नई पीढ़ी दिखाई देने लगती है और यह पीढ़ी धीरे-धीरे अपनी पहचान भी बनाने लगती है।[1]

प्रत्यक्षा सिन्हा ने अपनी विशिष्ठ पहचान बनाई। उनकी भाषा शिल्प और सूक्ष्म दृष्टि तथा संवेदना ने सबका ध्यान खींचा। वे स्त्री के अंतर्मन की कथाकार हैं और बहुत धैर्य से कहानियां बुनती हैं। उनमें किसी तरह की जल्दबाजी और हड़बड़ाहट नहीं है। वह किसी तरह के दवाब में कहानियां नही लिखतीं। वे किसी आग्रह और पूर्वाग्रहों की भी शिकार नही हैं। स्त्री विमर्श की पैरोकार होते हुए उनमें कोई शोर शराबा या झंडाबरदारी भी नहीं है। पिछले दिनों उन्होंने 'बारिश का देवता' कहानी लिखकर यह बता दिया है कि उनका गोलपोस्ट शिफ्ट हुआ है। इस पर उन्हें हंस कथा सम्मान भी मिला। सीढ़ियों के पास वाला कमरा' उनकी कहानी दो स्त्रियों दीदी और बकुल दी की गहरी पीड़ादायक कहानी है, जिसमें एक स्त्री का जीवन कितना अकेला और कष्टदायक हो जाता है। कहानी की नैरेटर भी एक स्त्री है। यह आपसी रिश्तों की ऐसी संस्मरणात्मक कहानी है जिसमें अपने समय का यथार्थ परत-दर-परत उघड़ जाता है। स्त्रियों की दशा में कोई बुनियादी बदलाव नहीं आया है। वे विधवा के रूप में विक्षिप्त और एक परित्यक्ता के रूप में टूटी हुई अकेली अब भी कई परिवारों में देखी जा सकती हैं। प्रत्यक्षा ने एक पर्यवेक्षक के रूप में इसे देख कर पेश किया है और पाठकों की संवेदना में एक हलचल पैदा की है। यह कहानी पाठकों से भी धैर्य और स्थिरमन से पढ़ने की मांग करती है. 'बारिशगर' उपन्यास स्त्री-विमर्श के इर्द-गिर्द घूमता है। यह बताता है कि आधुनिक स्त्री अपने जीवन से जुड़ीं यातनाओं और संघर्ष से मुक्त नहीं हो सकी है। उपन्यास की कहानी स्त्री का संघर्ष और रिश्तों की उधेड़बुन बयां करती है। प्रत्यक्षा का "पारा पारा" एक नए किस्म का उपन्यास है जो स्त्री के मन को चित्रित करता है जो प्रेम की तलाश में स्वतंत्रता की खोज करता है।

प्रकृति अपना हर काम आनन्द से करती है। हर मौसम, हर दिन और हर रात में एक प्रवाह है, आनन्द है। प्रकृति का हर जीव नयी संरचना मुग्ध होकर करता है। मुग्धता कभी गलत नहीं हो सकती। इसे इस तरह से समझना ज़रूरी है कि जिस क्रीड़ा से स्त्री और पुरुष निकट आते हैं, दो से एक बनते हैं और आनन्द से विभोर होते हैं, उसमें सही-गलत क्या हो सकता है? इश्क और वासना के बीच की दूरी सूत भर है। दोनों ही प्रकृति दत्त है। इन्सान की ज़रूरत भी। जब तक हम इस विषय पर खुलकर बोलेंगे नहीं, मनपसन्द लिखेंगे नहीं, पढ़ेंगे नहीं, तो अलमारी के बन्द कोनों और बिस्तर में तकिये के नीचे की तलहटी में अँधेरा बढ़ता ही जायेगा। / 'कामुकता का उत्सव : जीवन में प्रणय, वासना और आनन्द' सम्पादक : जयंती रंगनाथन / संकलन में संकलित कहानीकार / प्रत्यक्षा सिन्हा.[2]

विचार-विमर्श

आज की हिंदी कहानियों में स्त्री का जीवन, संघर्ष और स्वप्न मुखर रूप में व्यक्त हो रहा है।भूमंडलीकरण और बाजारवाद के बढ़ते प्रभाव का भी चित्रण अपने बदलते स्वरूप में मौजूद है।यह सच है कि आज स्त्रियां पहले की तरह बेड़ियों में जकड़ी नहीं रह गई हैं,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

पर वे पूरी तरह आजाद भी नहीं हुई हैं।लोग कहते रहें कि अब स्त्रियां आजाद हैं, अब उन्हें किसी की जरूरत नहीं है, पर बातें बेमानी-सी लगती हैं, जब हम पाते हैं कि स्त्री को आज भी भोग की वस्तु समझा जाता है।जब हम स्त्रियों के जीवन के अनछुए पहलुओं की पड़ताल करते हैं तो पाते हैं कि किस तरह वे हर मोड़ पर अपने लिए संघर्ष कर रही होती हैं।
आज की कहानियों में स्त्रियों के संघर्षों और स्वप्नों का स्वरूप कुछ बदलता हुआ भले नजर आ रहा हो, पर बात आज भी वही है जो पहले थी।
फिर भी हिंदी कहानी का स्वरूप बदल रहा है, क्योंकि स्त्री के प्रश्न बदल रहे हैं।आज की महिला कथाकारों ने अपनी कहानियों में न केवल घरेलू कामकाजी स्त्रियों के जीवन में हो रहे बदलावों को रेखांकित किया है, बल्कि उन चरित्रों को भी सामने लाने का प्रयास किया है जो महानगर में अपने बड़े सपनों के साथ जीना चाहती हैं।स्त्री के संघर्ष का ऐसा चित्रण न केवल स्त्री कथाकारों की कहानियों में दिखाई देता है, बल्कि पुरुष कथाकारों की कहानियों में भी देखने को मिलता है।

जिस तरह दुनिया की सभी स्त्रियों के जीवन, संघर्ष और स्वप्न अलग-अलग हैं, उसी तरह आज की कहानियों में स्त्री के जीवन, संघर्ष और स्वप्न काचित्रण भी अलग-अलग रूप में मौजूद है।देखा जा सकता है कि भारतीय समाज में स्त्रियों का आज भी विभिन्न तरह से उत्पीड़न हो रहा है।स्त्री को घर के कामकाज और चूल्हा-चौका से मुक्त जीवन जीने की आजादी कभी नहीं मिली।आज भी वे जितने भी उच्च पद पर क्यों न पहुंच जाएं, घर का सारा कामकाज वे ही करेंगी।ऐसा क्यों? क्या पुरुष घर के कामकाज में हाथ नहीं बंटा सकता है? यह भी कटु सत्य है कि आज केवल वे ही महिलाएं घर की चहारदीवारी से बाहर निकल पाई हैं, जिनके घरवालों ने उन्हें बाहर निकलने की आजादी दी है।आज भी बड़ी संख्या में वे पिता, पति, भाई या बेटे पर आश्रित होती हैं।

स्त्री के संघर्ष और स्वप्न केवल उसकी अपनी आजादी, अपने स्वतंत्र विचार, अपने देखे गए स्वप्नों को जीने भर से संबंधित नहीं हैं।हमारे परिवार और समाज का ढांचा भी विचार का विषय है।आज भी कोई स्त्री अकेले रात में सफर करने से घबराती है तो आखिरकार यह किसका डर है? 21वीं सदी में पांव धरने के बाद तो यह सब नहीं होना था!

आज स्त्री के जीवन, संघर्ष और स्वप्न को लेकर अनेक कहानियां लिखी जा रही हैं जिन पर विस्तारपूर्वक चर्चा करना यहां उद्देश्य नहीं है।पर आज की कहानियां हमें आश्वस्त करती हैं कि वे अब पहले से भी ज्यादा मुखर रूप में स्त्री के जीवन, संघर्ष और स्वप्न के विविध रूपों को उद्घाटित कर रही हैं।कई लोग कहते हैं कि स्त्री का जीवन एक ऐसी पहेली है जिसे जल्दी में नहीं बूझा जा सकता है।ऐसा वे ही लोग कहते हैं जिन्होंने उसके जीवन को कभी पहेली या रहस्यों से बाहर आने नहीं दिया है।उसकी जटिलताएं, उसकी मान्यताएं, उसकी सीमाएं पहले ही तय कर दी गई हैं जिसमें अब काफी बदलाव भी इधर हुए हैं।[3]

आज की कहानियों में कौन सा परिवर्तन देखने को मिल रहा है, यह परिवर्तन किस सकारात्मक दिशा में है और यह स्त्री की मन:स्थिति को मजबूत करने में कितनी सफल होती नजर आ रही है, इन मुद्दों पर चर्चा जरूरी है।आज कहानियां केवल दुख और निराशा से भरी हुई नहीं हैं, बल्कि उनमें आशा की किरणें भी हैं जो स्त्री को नए ख्वाब बुनने के लिए प्रेरित करती हैं।आज कहानियों में जीवन की ऐसी ज्योति दिखाई देती है जो स्त्री को अंधेरे से निकाल एक रोशनी से भरी ऐसी दुनिया में ले जाती है जहां सिर्फ उसका अपना जीवन है।इन संदर्भों में हमारे समय की कई महत्वपूर्ण लेखिकाओं के विचार इस परिचर्चा में हैं।

पिछले सौ वर्षों में देखें तो स्त्री संघर्ष का ग्राफ़ बहुत तेजी के साथ ऊपर की ओर बढ़ा है।समाज की जुझारू जमात की स्त्रियों की अपनी पहल से एक निरंतर बदलता हुआ परिवेश और पर्यावरण उसके चारों ओर निर्मित हुआ है।स्त्रियों ने घर की चहारदीवारी के बाहर कदम निकाला पर घर की जिम्मेदारी को ओझल नहीं होने दिया।घर और बाहर-दोनों कार्य क्षेत्रों की जिम्मेदारी को निभाया।उसका यह सक्रिय और बदला हुआ चेहरा भारतीय समाज और परिवेश की रूढ़िग्रस्त मानसिकता और परंपरागत माइंडसेट को उद्वेलित और अव्यवस्थित कर देने के लिए पर्याप्त था।अष्टभुजा बनने के बाद भी न स्त्री की जिम्मेदारियां कम हुईं, न प्रताड़ना और लांछनों के स्वरूप।उसके बदले हुए हर स्वरूप से परंपरावादी जमात की सत्ता ने बौखलाहट में कुछ स्त्रियों को ही अपनी बिरादरी के खिलाफ खड़ा कर एक बड़ा छद्म रच दिया।उसके बदलाव को लेकर फब्तियां कसी जाने लगीं और जजमेंटल होने में किसी ने ठहर कर अपने को टटोलने की जरूरत नहीं समझी।पितृसत्ता का स्वरूप पहले से अधिक जटिल और संश्लिष्ट हो गया है।उसके बरक्स स्त्री संघर्ष के मायने और उपकरण भी बदले हैं।

आज का समय और समाज जटिलताओं, भूलभुलैयों और गुंजलकों का है, -जहां भटकने और मानसिक रूप से ध्वस्त हो जाने की संभावनाएं भी बढ़ गई हैं।इन्हीं सबके बीच आज हम एक मजबूत और बेखौफ स्त्री की जमात को उभरते हुए देख रहे हैं।स्त्रियों के द्वारा बृहत्तर प्रतिरोध का इतिहास देश के विशाल पटल पर पहली बार दर्ज हुआ है! नागरिकता कानून (सी.ए.ए. और एन.आर.सी) के खिलाफ एक बड़ी स्त्री बिरादरी ने शाहीन बाग समेत पूरे देश में हर जगह एक आंदोलन खड़ा किया।पिछले चार महीनों से ट्रैक्टर चलाती हुई किसान महिलाएं कड़कती ठंड और सारी असुविधाओं और विपरीत स्थितियों के बीच दिल्ली के बॉर्डर पर डटी हुई थीं।आज का समय स्त्री के संघर्ष के इतिहास में एक नया अध्याय लिख रहा है!

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

आज की हिंदी कहानी पिछले दो-तीन सालों के इन सामाजिक कार्यों और स्त्रियों के प्रतिरोध के बरक्स कहां खड़ी है, इसका लेखा-जोखा करना एक जल्दबाजी होगी।एक बड़े वितान में इसका रचा जाना प्रतीक्षित है।कोई भी आंदोलन या सामाजिक बदलाव रचनात्मकता में उकेरा जा सके, इसके लिए एक दूरी, एक तटस्थता के साथ-साथ संलग्नता और विश्लेषण की क्षमता भी जरूरी है।आज की हिंदी कहानी देश के सामाजिक और राजनीतिक बदलावों से रू-ब-रू होती रही है।आज का महत्वपूर्ण समय भी इसमें दर्ज होगा।इसे कुछ मोहलत दी जानी चाहिए।

लेखन का एक मूलभूत तत्व है- संवेदना और बेचैनी।हमारे आस-पास हर रोज घटती कुछ दुर्घटनाएं, कुछ अनाचार अत्याचार, कुछ हिंसक वारदातें, कुछ अमानवीय दंश, कुछ बेगैरत समझौते – एक संवेदनशील मन पर निरंतर आघात करते हैं और उसे बेचैनी से भर देते हैं चाहे वह स्त्री हो या पुरुष! कोई भी कला इस बेचैनी से निबटने का जरिया बन जाती है -चाहे वह चित्रकला हो, संगीत या नृत्य हो या किसी भी विधा में लेखन हो! कला सिर्फ कला के लिए रहकर जीवित नहीं रह सकती।सौंदर्यबोध के साथ-साथ जीवन दर्शन और सामाजिक बोध भी अनिवार्य है।जीवन और समाज से सरोकार ही कला की प्राणवायु हैं।पुरुष हों या स्त्री रचनाकार- ये सरोकार दोनों के लिए समान हैं।[1,2]

पुरुष और स्त्री का मूलभूत अंतर उनकी मानसिक संरचना में मौजूद है।पुरुष स्त्री के प्रति कितना भी संवेदनशील हो, वह स्त्री की तकलीफ का दृष्टा ही हो सकता है, भोक्ता नहीं।यही बात स्त्री के लिए भी कही जा सकती है, लेकिन स्त्री चूंकि हमारी सामाजिक संरचना में हमेशा प्रताड़ित रही है और उसका दर्जा दोयम ही रहा है इसलिए स्त्री का अपने बारे में लिखा गया अपना वृत्तांत ज्यादा प्रामाणिक होता है।पुरुष रचनाकारों ने अपनी कलम से स्त्री को तमाम आलंकारिक उपकरणों से सजाया संवारा है या फिर उसकी व्यथा पर उद्वेलित होकर आंसू भी उड़ेले हैं, लेकिन अपना भोगा और झेला हुआ यथार्थ एक स्त्री खुद ही लिख सकती है और वह बेबाक ज्यादा प्रभावी होगा।

परिणाम

उनके प्रमुख कहानी-संग्रहों- 'जंगल का जादू तिल तिल', 'पहर दोपहर ठुमरी', 'एक दिन मराकेश में' स्त्री-जीवन को सभी पहलुओ से जोड़कर उसके मानवीय संबंधों, टूटते बिखरते सपनों, प्रेम, वेदना, हर्ष-विषाद और अवसाद सभी क्षणों को संवेदना के एक सूत्र में पिरोने की अद्भुत कहानियाँ हैं.

कॉफी-हाउस' में हम हर हफ्ते एक कहानी लेकर हाजिर होते हैं।

जैसा कि हमने हमेशा कहते हैं कि हम हर दौर की कहानियां पढ़ना चाहते हैं।

'कथा-पाठ' का मक़सद यही है कि कहानियों को 'सुनने' का सिलसिला शुरू हो।

'कॉफी-हाउस' में प्रस्तुत है प्रत्यक्षा की कहानी 'बलमवा तुम क्या जानो प्रीत'।

प्रत्यक्षा से आप भली-भांति परिचित हैं।

उनके दो कहानी संग्रह हैं--'पहर दोपहर ठुमरी' और 'जंगल का जादू तिल तिल'। प्रत्यक्षा का ब्लॉग यहां पढ़ा जा सकता है।

प्रत्यक्षा कविता और कहानियों की दुनिया की मुसाफिर हैं। उनके पास कहानी कहने का अपना एक मुहावरा है। उनकी कहानी में भी कविताई की छाप है। उनकी भाषा बड़ी ध्वन्यात्मक है। खनकती हुई-सी।

ज़ाहिर है कि 'कॉफी-हाउस' में उन्हें सुनकर आपको आनंद आयेगा।

हम शुक्रगुज़ार हैं कि उन्होंने अपनी कहानी 'कॉफी-हाउस' के लिए दी।

इस कहानी को सुनने के लिए आपको अपने व्यस्त जीवन में से तकरीबन बारह मिनिट निकालने होंगे।

हिंदी की चर्चित युवा लेखिका प्रत्यक्षा सिन्हा को कहानी के जरिये समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करने के लिए राजेन्द्र यादव हंस कथा सम्मान प्रदान किया गया

प्रत्यक्षा की ताज़ातरीन कहानी `बारिश के देवता `चेरापूंजी की परिस्थितयों के विषय में बताती एक विलक्षण कहानी है।[2,3]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

निष्कर्ष

प्रगति मैदान में चल रहा विश्व पुस्तक मेला रविवार को समाप्त हो गया. इस बार मेले में तमाम नई किताबें आईं और इन पर चर्चा-परिचर्चा हुई. मेले के आखिरी दिन भी न किताबों के आगमन का सिलसिला भी लगा रहा. राजकमल प्रकाशन के जलसाघर में बहुप्रतीक्षित उपन्यास 'आईनासाज़' का लोकार्पण किया गया. राजकमल प्रकाशन के प्रबंध निदेशक अशोक महेश्वरी ने कहा, "विश्व पुस्तक मेले में पाठकों को देखकर किताब के प्रति भरोसा मजबूत हुआ है. बारिश और कड़ाके की ठंड के बावजूद पाठक किताब के पक्ष में डटे रहे. युवा पाठकों और हिन्दी के युवा लेखन में मेरा विश्वास दृढ़ हुआ. लगातार लगता रहा कि हमारे युवा लेखक अपनी परम्परागत विरासत को संभालने के साथ लेखन के क्षेत्र में नए मानक गढ़ने के लिए तैयार हैं. मुझे विश्वास है कि आने वाला साल मेरी इस सोच को सही सबित करेगा. मेले में हमने साठ से अधिक नई पुस्तकें का प्रकाशन किया, प्रत्यक्षा सिन्हा की 'ग्लोब के बाहर लड़की', शामिल है. [1,2,3]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. उपन्यास 'बारिशगर
2. प्रत्यक्षा सिन्हा की 'ग्लोब के बाहर लड़की
3. प्रत्यक्षा का "पारा पारा" एक नए किस्म का उपन्यास

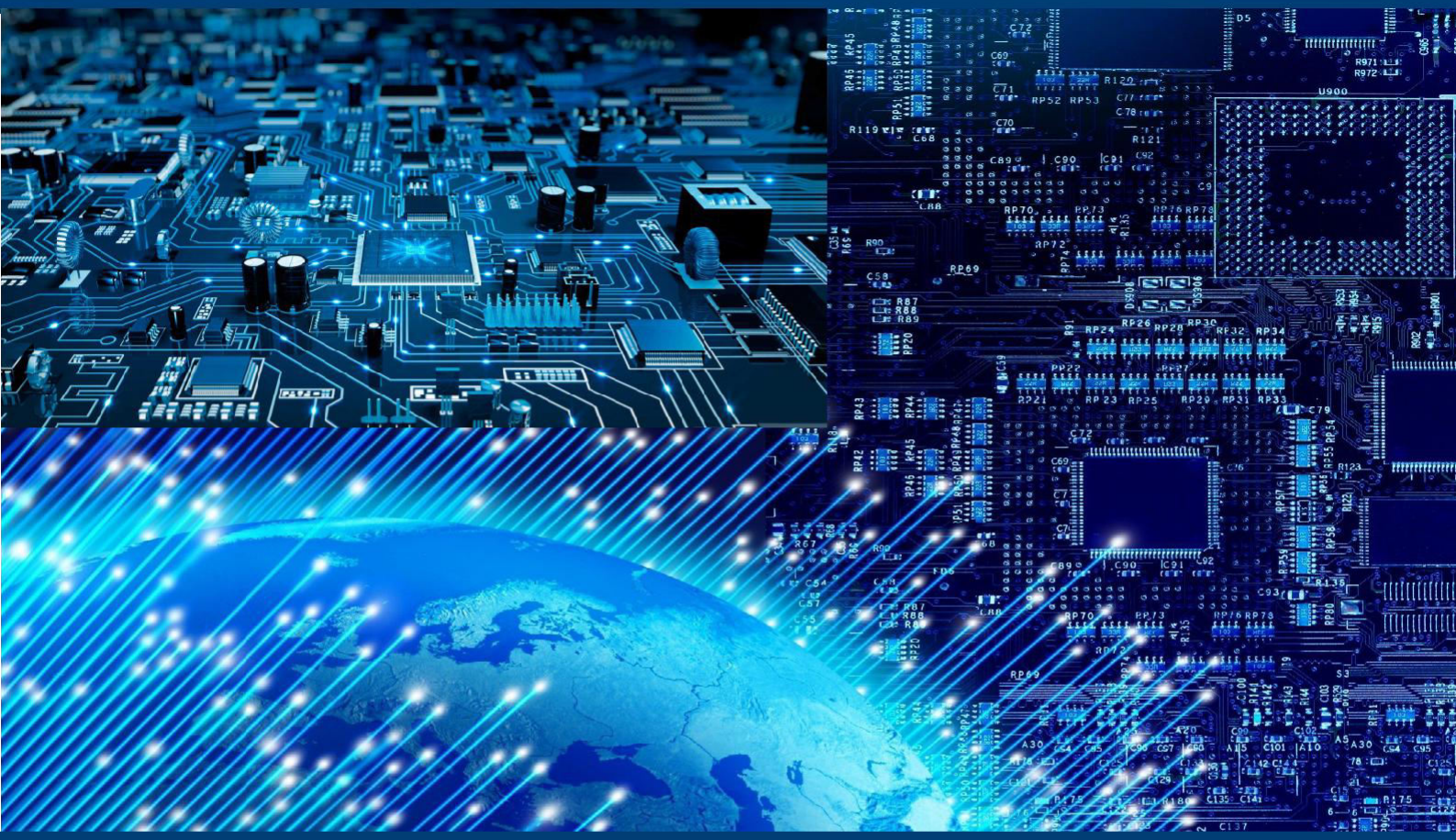

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |